गंगाधर प्रधान
अकादेमी पुरस्कार : ओड़िसी नृत्य

1948 में पानिकुल गाँव, उड़ीसा में जन्मे श्री गंगाधर प्रधान को गोटिपुआ कला का प्रशिक्षण बाँछानिधि प्रधान, चन्द्र शेखर पटनायक, और महादेव राउत के सान्निध्य में प्राप्त हुआ। बाद में आपने पंकज चरण दास, देब प्रसाद दास, मिनती मिश्र और धीरेन्द्र नाथ पटनायक के निर्देशन में उत्कल संगीत महाविद्यालय, भुवनेश्वर से ओड़िसी नृत्य में नृत्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। भारत सरकार की फ़ैलोशिप के अन्तर्गत आपने गुरू केलुचरण महापात्र से और आगे प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने सिंघारी श्याम सुन्दर कर और बनमाली महाराणा से मार्दल वादन भी सीखा।

विगत पच्चीस वर्षों में श्री गंगाधर प्रधान ने ओड़िसी नृत्य के गुरू के रूप में योगदान दिया है। 1972 में आपने भुवनेश्वर में उड़ीसा नृत्य एकेडेमी की स्थापना की, जहाँ आपने अनेक नर्तकों को प्रशिक्षित किया जो, आज इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं। तत्पश्चात् आपने उड़ीसा की नृत्य एवं संगीत परम्पराओं में प्रशिक्षण और उनके प्रसार के लिए कोणार्क नाट्य मंडप तथा अन्य अनेक संस्थानों की स्थापना की। नृत्य संरचनाकार के रूप में भी आप उत्कृष्ट हैं।

एक श्रेष्ठ मार्दल वादक श्री गंगाधर प्रधान ने अनेक अवसरों पर स्व. संयुक्ता पाणिग्रही के नृत्य के साथ संगत की। समारोहों के आयोजन में भी आपने कुशल नेतृत्व का परिचय दिया और अनेक महोत्सवों में आपने अपने शिष्यों का कला प्रदर्शन किया। 1993 में आप उड़ीसा संगीत नाटक अकादेमी के पुरस्कार से सम्मानित हुए।

श्री गंगाधर प्रधान को ओड़िसी नृत्य में योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

GANGADHAR PRADHAN
Akademi Award: Odissi Dance

Born in 1948 in Panikula village, Orissa, Shri Gangadhar Pradhan was trained in the Gotipua's art by Banchhanidhi Pradhan, Chandra Shekhar Pattnaik, and Madadev Rout. Later, he went through the Nrutyacharya course in Odissi dance at Utkal Sangeet Mahavidyalaya, Bhubaneswar, under the guidance of Pankaj Charan Das, Deba Prasad Das, Minati Mishra and Dhirendra Nath Pattanaik. With a scholarship from the Government of India, he received further training under Guru Kelucharan Mohapatra. He was also trained in Mardala by Singhari Shyama Sunder Kar and Banamali Maharana.

In the past twenty-five years, Shri Gangadhar Pradhan has made a contribution to Odissi dance as a teacher. He set up the Orissa Dance Academy in Bhubaneswar in 1972 where he has trained a number of dancers who are now established in the field. He subsequently set up the Konark Natya Mandap and several other institutions for training and propagation of Orissa's dance and music traditions. He has also excelled as a choreographer.

An excellent Mardala artist, Shri Gangadhar Pradhan often accompanied the late Sanjukta Panigrahi in her recitals. He has also shown leadership in organizing festivals of arts and has presented his disciples in many major events. He was honoured with the Orissa Sangeet Natak Akademi Award in 1993.

Shri Gangadhar Pradhan receives the Sangeet Natak Akademi Award for his contribution to Odissi dance.